॥ व्यासाष्टकम् ॥

नमो ज्ञानानलशिखापुञ्जपिङ्गजटाभृते।
कृष्णायाकृष्णमहसे कृष्णद्वैपायनाय ते॥ १॥

नमस्तेजोमयश्मश्रुप्रभाशबलितत्विषे।
वक्त्रवागीश्वरीपद्मरजसेवोदितश्रिये ॥ २॥

नमः सन्ध्यासमाधाननिष्पीतरवितेजसे।
त्रैलोक्यतिमिरोच्छेददीपप्रतिमचक्षुषे ॥ ३॥

नमः सहस्रशाखाय धर्मोपवनशाखिने।
सत्त्वप्रतिष्ठापुष्पाय निर्वाणफलशालिने॥ ४॥

नमः कृष्णाजिनजुषे बोधनन्दनवासिने।
व्याप्तायेवालिजालेन पुण्यसौरभलिप्सया॥ ५॥

नमः शशिकलाकारब्रह्मसूत्रांशुशोभिने।
श्रिताय हंसकान्त्येव सम्पर्कात् कमलौकसः॥ ६॥

नमो विद्यानदीपूर्णशास्त्राब्धिसकलेन्दवे।
पीयूषरससाराय कविव्यापारवेधसे॥ ७॥

नमः सत्यनिवासाय स्वविकाशविलासिने।
व्यासाय धाम्ने तपसां संसारायासहारिणे॥ ८॥

॥ इति काश्मीरिकेण क्षेमेन्द्रकविना कृतायां भारतमञ्जर्याम् उपसंहारे पठितं व्यासाष्टकं सम्पूर्णम्॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:
http://stotrasamhita.net/wiki/Vyasashtakam.

generated on **August 23, 2026**

Downloaded from http://stotrasamhita.github.io | StotraSamhita | Credits